स्नातकोत्तर हिन्दी-विभाग
आर० एन० कॉलेज, हाजीपुर

डॉ० कविता कुमारी सिंह

तृतीय सेमेस्टर – चतुर्दश पत्र
विषय – काव्यशास्त्रीय सम्प्रदाय

(1) धनंजय और धनिक – धनंजय और धनिक दोनों भाई थे। वे दसवीं शताब्दी के अंत में विद्यमान थे। धनंजय ध्वनि विरोधी आचार्य थे तथा दशरूपक नामक ग्रन्थ की रचना की है। धनिक ने उसपर 'अवलोक' नाम की टीका लिखी है जो विद्वतापूर्ण एवं सारगर्भित है। रसनिष्पत्ति के विषय में इन्होंने व्यंजनावाद को अस्वीकृत कर तात्पर्यवाद का समर्थन किया है। साधारणीकरण के प्रसंग में इन्होंने सर्वत्र कवित्व का समर्थन किया है। शांत रस को काव्य में तो ग्राह्य मानते हैं, पर नाटक में नहीं।

10. कुन्तक — इन्हें 'वक्रोक्ति' सम्प्रदाय के प्रवर्तक माना जाता है। कुन्तक का समय दशम शती के अंत तथा एकादश शती का आरम्भ माना जाता है। इनकी प्रसिद्धि 'वक्रोक्ति-जीवितम्' नामक ग्रन्थ के कारण है। इसमें चार उन्मेष हैं। कुन्तक प्रतिभासंपन्न आचार्य थे। इन्होंने वक्रोक्ति को काव्य का जीवन माना है। इन्होंने सर्वप्रथम अलंकारों की वर्तमान संख्या को स्थिर करने का मार्ग दिखाया। स्वभावोक्ति अलंकार के संबंध में इनकी धारणा साहसपूर्ण है और रसवदि अलंकारों का विवेचन नितांत आवश्यक है।

क्षेमेन्द्र — क्षेमेन्द्र को औचित्य सम्प्रदाय प्रवर्तक माना जाता है। क्षेमेन्द्र का शिष्य नव गुप्त थे। इनके तीन ग्रन्थ हैं — औ… र चर्चा, सुवृत तिलक और कवि कण्ठाभरण… ग्रन्थ में औचित्य को लक्ष्य में रख…

उन्होंने वाणी के विभिन्न अंगों — वाक्य, गुण, रस, क्रिया, करण, लिंग, उपदेश, स्वभाव आदि का स्वरूप निर्धारण किया है। द्वितीय ग्रन्थ में छन्द के औचित्य का निर्देश है। तीसरा ग्रन्थ कवि-शिक्षा से संबंध है।

12. मम्मट — इनकी ख्याति 'काव्य-प्रकाश' के कारण है। मम्मट का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। मम्मट ने ध्वनि सम्प्रदाय की पुष्टि के लिए अनुमानवादी, अभिधावादी, लक्षणावादी आदि आचार्यों का प्रबल तर्कों द्वारा खंडन प्रस्तुत कर ध्वनि की स्थापना की। काव्य-प्रकाश की विशेषता है — तीन गुणों की स्वीकृति और उनमें 52 समेत 20 गुणों का समाहार दोष निरूपण का विस्तार इस ग्रन्थ की अन्य उल्लेखनीय विशेषता है।

13. विश्वनाथ — इनका समय 14 वीं शताब्दी के है। आचार्य विश्वनाथ ने दस अध्यायों में 'साहित्य-दर्पण' नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना विश्वनाथ ने मम्मट, आनन्दवर्धन, कुंतक, आदि के काव्य-लक्षणों का खण्डन प्रस्तुत

के उपरान्त 'रस' को काव्य की आत्मा मानते हुए काव्य का लक्षण निर्धारित किया है।

पंडित जगन्नाथ — इन्हें 'पंडितराज' की उपाधि से विभूषित किया था। अतः इनका समय 17 वीं शती का मध्यभाग है। इनकी प्रसिद्ध रचना 'रसगंगाधर' है जो अपूर्ण है। इन्होंने काव्य के चार भेद माना है — उत्तमोत्तम, उत्तम, मध्यम तथा अधम। ये ध्वनिवादी आचार्य थे फिर भी रस के प्रति इन्होंने अधिक समादर प्रकट किया है। इन्होंने सर्वप्रथम गुण को रस के अतिरिक्त शब्द अर्थ और रचना का भी धर्म समान रूप स्वीकार किया। जगन्नाथ की समर्थ भाषा-शैली, सिद्धान्त प्रतिपादन की अद्भुत एवं परिपक्व विचार शक्ति और खण्डन करने की विलक्षण प्रतिभा उन्हें प्रौढ़ एवं सिद्धहस्त आचार्य मानने को बाध्य करती है। 'रसगंगाधर' के अतिरिक्त अलंकारशास्त्र के संबंध में इनका एक अन्य ग्रन्थ भी उपलब्ध है — चित्रमीमांसा खण्डनं